

## समावेशी शिक्षा का मुख्य घटक

\*Dr. Shilpy Kumari

Assistant Professor, Teachers' Training College, Tilka Manjhi Bhagalpur University,  
Bhagalpur, Bihar, India.

Article Received: 17 February 2026

\*Corresponding Author: Dr. Shilpy Kumari

Article Revised: 07 March 2026

Assistant Professor, Teachers' Training College, Tilka Manjhi Bhagalpur University,  
Bhagalpur, Bihar, India.

Published on: 27 March 2026

DOI: <https://doi-doi.org/101555/ijrpa.4635>

### ABSTRACT

प्रत्येक बालक में कुछ ऐसे गुण होते हैं जो जन्मजात पाये जाते हैं। यह गुण प्रायः अनुवांशिकता से सम्बन्धित भी हो सकते हैं, अथवा नहीं भी, इन्हीं गुणों के आधार पर ही बालकों का शैक्षिक स्तर निर्भर करता है। सामान्य बालकों का शैक्षिक स्तर उनकी बुद्धिलब्धि तथा क्षमताओं के आधार पर ही तय किया जाता है। ठीक इसी प्रकार वह बालक जो कि विशिष्ट बालक होते हैं उन्हें भी शिक्षा के पूर्ण अवसर प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त होता है। इन बालकों को दी गई शिक्षा अलग-अलग प्रकार की होती है क्योंकि इन बालकों का शैक्षिक स्तर अलग-अलग होता है। समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) का अर्थ है एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जहाँ सामान्य और विशेष आवश्यकताओं वाले (दिव्यांग) बच्चे एक ही छत के नीचे, एक ही कक्षा में साथ-साथ सीखते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य भेदभाव को समाप्त करना और हर बच्चे की क्षमता को निखारना है। समावेशी शिक्षा वह शिक्षा होती है, जिसके द्वारा विशिष्ट क्षमता वाले बालक जैसे मन्दबुद्धि, अन्धे बालक, बहरे बालक तथा प्रतिभाशाली बालकों को ज्ञान प्रदान किया जाता है। समावेशी शिक्षा के द्वारा सर्वप्रथम छात्रों के बौद्धिक शैक्षिक स्तर की जाँच की जाती है, तत्पश्चात् उन्हें दी जाने वाली शिक्षा का स्तर निर्धारित किया जाता है। अतः यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है, जो कि विशिष्ट क्षमता वाले बालकों हेतु ही निर्धारित की जाती है। अतः इसे समेकित अथवा समावेशी शिक्षा का नाम दिया जाता है। समावेशी शिक्षा के मुख्य घटक अनुकूलित पाठ्यक्रम, व्यक्तिगत शिक्षण योजना, प्रशिक्षित शिक्षक, बाधा मुक्त वातावरण, सहायक उपकरण और तकनीक, अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी है।

**कूटशब्द :** समावेशी शिक्षा, अनुकूलित पाठ्यक्रम, व्यक्तिगत शिक्षण योजना, प्रशिक्षित शिक्षक, बाधा मुक्त वातावरण

## समावेशी शिक्षा के मुख्य घटक (Components) निम्नलिखित हैं:

### 1. अनुकूलित पाठ्यक्रम (Adapted Curriculum)

समावेशी शिक्षा में 'अनुकूलित पाठ्यचर्या' (Adapted Curriculum) का अर्थ है सामान्य पाठ्यक्रम में इस तरह के बदलाव या संशोधन करना जिससे विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CwSN) भी अपनी क्षमताओं के अनुसार कक्षा के अन्य बच्चों के साथ प्रभावी ढंग से सीख सकें। समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) में अनुकूलित पाठ्यक्रम (Adapted Curriculum) का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कक्षा में हर बच्चा, चाहे उसकी सीखने की क्षमता या शारीरिक स्थिति कुछ भी हो, एक ही छत के नीचे प्रभावी ढंग से सीख सके। इसका अर्थ पाठ्यक्रम को "कम" करना नहीं, बल्कि उसे "लचीला" बनाना है। जब बच्चा अपनी गति से सीखता है, तो उसका आत्म-सम्मान बढ़ता है। यह दिव्यांग और सामान्य बच्चों के बीच की दूरी को कम करता है। यह 'शिक्षा के अधिकार' के मूल मंत्र को सार्थक करता है।

### अनुकूलित पाठ्यक्रम के पीछे के मूल विचार निम्नलिखित हैं:

#### A. पहुँच योग्यता (Accessibility)

इसका अर्थ है कि शिक्षण सामग्री हर बच्चे की पहुँच में होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा देख नहीं सकता, तो उसके लिए पाठ्यसामग्री ब्रेल (Braille) या ऑडियो में उपलब्ध कराना।

#### B. विषय-वस्तु में संशोधन (Modification of Content)

इसमें पाठ्यक्रम के कठिन स्तर को बच्चे की योग्यता के अनुसार बदला जाता है।

**उदाहरण:** यदि पूरी कक्षा एक लंबा अध्याय पढ़ रही है, तो विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को उस अध्याय के मुख्य विचार या सारांश को समझने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

#### C. शिक्षण विधियों में बदलाव (Adaptation in Instruction)

शिक्षक अपनी पढ़ाने की शैली में बदलाव लाते हैं। इसमें बहु-संवेदी दृष्टिकोण (Multi-sensory Approach) का उपयोग किया जाता है, जैसे: दृश्य सहायता (Visual aids), करके सीखना (Learning by doing), समूह चर्चा (Group discussion)

#### D. मूल्यांकन में लचीलापन (Flexibility in Evaluation)

सभी बच्चों का आकलन एक ही तरीके से नहीं किया जाता। लिखने में असमर्थ बच्चे के लिए मौखिक परीक्षा। धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए अतिरिक्त समय। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों (MCQs) का उपयोग।

## 2. प्रशिक्षित शिक्षक (Trained Teachers) की भूमिका

समावेशी कक्षा की सफलता शिक्षकों पर निर्भर करती है। समावेशी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं है, बल्कि वे एक मार्गदर्शक, परामर्शदाता (Counsellor) और परिवर्तन के अग्रदूत के रूप में कार्य करते हैं। उनके बिना समावेशी शिक्षा का लक्ष्य 'समानता से समता' (Equality to Equity) की ओर बढ़ना असंभव है। समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) की सफलता पूरी तरह से प्रशिक्षित शिक्षकों (Trained Teachers) की भूमिका पर निर्भर करती है। एक सामान्य कक्षा में जब विभिन्न क्षमताओं वाले बच्चे एक साथ बैठते हैं, तो शिक्षक केवल एक 'पढ़ाने वाला' नहीं, बल्कि एक 'सुविधादाता' (Facilitator) बन जाता है।

यहाँ समावेशी शिक्षा में प्रशिक्षित शिक्षकों की मुख्य भूमिकाओं का विवरण दिया गया है:

### A. व्यक्तिगत शिक्षण योजना (IEP) का निर्माण

प्रशिक्षित शिक्षक प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं और सीखने की गति को समझते हैं। वे **Individualized Education Program (IEP)** तैयार करते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CWSN) अपनी क्षमता के अनुसार प्रगति कर सकें।

### B. अनुकूलित शिक्षण विधियों का उपयोग

शिक्षक केवल व्याख्यान विधि (Lecture method) पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि वे बहु-संवेदी शिक्षण (Multi-sensory Teaching) का उपयोग करते हैं।

- ❖ **दृश्य सहायक सामग्री (Visual Aids):** चार्ट, वीडियो और चित्रों का प्रयोग।
- ❖ **श्रव्य सामग्री (Audio Aids):** दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रिकॉर्डिंग।
- ❖ **गतिविधियाँ (Tactile Activities):** छूकर या प्रयोग करके सीखना।

### C. बाधा-मुक्त वातावरण तैयार करना

शिक्षक का कार्य केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं है, बल्कि कक्षा में ऐसा वातावरण बनाना है जहाँ शारीरिक और मनोवैज्ञानिक बाधाएँ न हों। इसमें शामिल है:

बैठने की व्यवस्था में लचीलापन।

बच्चों के बीच सहयोग और मित्रता की भावना विकसित करना।

दिव्यांग बच्चों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाना।

#### D. सतत और व्यापक मूल्यांकन (CCE)

एक प्रशिक्षित शिक्षक जानता है कि "एक ही माप सभी के लिए सही नहीं होता" (One size does not fit all)। वे मूल्यांकन के लिए लचीले तरीके अपनाते हैं:

मौखिक परीक्षा या व्यावहारिक प्रदर्शन। ,उत्तर देने के लिए अतिरिक्त समय देना। ,छोटे-छोटे चरणों में परीक्षा लेना।

#### E. माता-पिता और विशेषज्ञों के साथ समन्वय

शिक्षक स्कूल और घर के बीच एक सेतु (Bridge) का कार्य करते हैं। वे माता-पिता को बच्चे की प्रगति के बारे में सूचित करते हैं। विशेष शिक्षक(Special Educator) मनोवैज्ञानिकों और चिकित्सकों के साथ मिलकर बच्चे के विकास पर चर्चा करते हैं।

#### F. आधुनिक तकनीक और उपकरणों का ज्ञान

प्रशिक्षित शिक्षक 'सहायक तकनीक' (Assistive Technology) के उपयोग में निपुण होते हैं, जैसे:

**Screen Readers** (दृष्टिबाधित बच्चों के लिए)।

**Hearing Aids** (श्रवण बाधित बच्चों के लिए)।

विशेष सॉफ्टवेयर और ऐप्स।

### 3. बाधा-मुक्त वातावरण (Barrier-Free Environment)

समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) के संदर्भ में **बाधा-मुक्त वातावरण (Barrier-Free Environment)** का अर्थ केवल सीढ़ियों की जगह रैंप बनाना नहीं है, बल्कि एक ऐसा समग्र ईकोसिस्टम तैयार करना है जहाँ प्रत्येक बच्चा—चाहे वह शारीरिक रूप से अक्षम हो, सामाजिक रूप से पिछड़ा हो या सीखने में धीमा हो—बिना किसी रुकावट के शिक्षा प्राप्त कर सके।

इसे मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में समझा जा सकता है:

**A. भौतिक बाधा-मुक्त वातावरण (Physical Barrier-Free Environment)--** यह स्कूल की इमारत और बुनियादी ढांचे से संबंधित है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बच्चा स्वतंत्र रूप से पूरे परिसर में घूम सके।

- **पहुँच (Accessibility):** ऊँची सीढ़ियों के स्थान पर रैंप (Ramp) और रेलिंग का होना।
- **उपयुक्त शौचालय:** दिव्यांग बच्चों की जरूरतों के अनुसार चौड़े दरवाजे और हैंडल वाले शौचालय।

- **कक्षा की व्यवस्था:** बैठने की ऐसी व्यवस्था जहाँ व्हीलचेयर आसानी से आ-जा सके और डेस्क की ऊँचाई उपयुक्त हो।
- **संकेत और दिशा-निर्देश:** दृष्टिबाधित बच्चों के लिए ब्रेल लिपि में संकेत और श्रवण बाधित बच्चों के लिए दृश्य (Visual) संकेत।

**B. सूचनात्मक और शैक्षणिक बाधा-मुक्त वातावरण (Informational & Pedagogical)---** इसका अर्थ है कि ज्ञान प्राप्त करने के तरीकों में कोई बाधा न हो।

- **लचीला पाठ्यक्रम:** जैसा कि हमने पहले चर्चा की, पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिसे बच्चा अपनी क्षमता के अनुसार समझ सके।
- **सहायक तकनीक (Assistive Tech):** सुनने के यंत्र, स्क्रीन रीडर सॉफ्टवेयर, और बड़े फॉन्ट वाली किताबें उपलब्ध कराना।
- **बहु-संवेदी शिक्षण:** शिक्षक केवल बोलकर न पढ़ाएं, बल्कि छूने, देखने और महसूस करने वाली सामग्री का उपयोग करें ताकि सीखने की प्रक्रिया में कोई 'मानसिक बाधा' न रहे।

**C. सामाजिक और मनोवैज्ञानिक बाधा-मुक्त वातावरण (Attitudinal & Psychological)-** यह सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि अक्सर भौतिक बाधाओं से ज्यादा हानिकारक 'नकारात्मक दृष्टिकोण' होता है।

- **भेदभाव का अंत:** शिक्षकों और अन्य सहपाठियों के मन से यह धारणा हटाना कि विशेष आवश्यकता वाला बच्चा 'कमतर' है।
- **स्वीकार्यता (Acceptance):** एक ऐसा माहौल जहाँ बच्चा सुरक्षित और सम्मानित महसूस करे। उसे यह डर न हो कि उसकी अक्षमता के कारण उसका मजाक उड़ाया जाएगा।
- **संवेदनशीलता:** पूरे स्कूल स्टाफ को समावेशी शिक्षा के प्रति संवेदनशील बनाना ताकि वे बच्चे की भावनात्मक जरूरतों को समझ सकें।

**4. सहायक उपकरण (Assistive Devices) और तकनीकी समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)** में सहायक उपकरण (Assistive Devices) और तकनीकी (Technology) वे साधन हैं जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) की शारीरिक या मानसिक सीमाओं को दूर कर उन्हें सामान्य बच्चों के साथ सीखने में सक्षम बनाते हैं। इन उपकरणों का मुख्य उद्देश्य बच्चे की स्वायत्तता (Independence) बढ़ाना और सीखने की बाधाओं को कम करना है।

**A. दृष्टिबाधित बच्चों के लिए सहायक तकनीक (For Visual Impairment):** जिन बच्चों को देखने में कठिनाई होती है, उनके लिए तकनीक 'आँखों' का कार्य करती है:

- ❖ **स्क्रीन रीडर (Screen Readers):** जैसे JAWS या NVDA सॉफ्टवेयर, जो कंप्यूटर स्क्रीन पर लिखे टेक्स्ट को आवाज में बदल देते हैं।
- ❖ **ब्रेल डिस्प्ले और कीबोर्ड:** जो डिजिटल सामग्री को ब्रेल लिपि में परिवर्तित कर देते हैं।
- ❖ **मैग्निफिकेशन सॉफ्टवेयर:** कम दृष्टि वाले बच्चों के लिए स्क्रीन के अक्षरों को बड़ा करने वाले टूल्स।
- ❖ **बोलने वाली किताबें (Talking Books):** ऑडियो लाइब्रेरी और डिजिटल पॉडकास्ट।

**B. श्रवणबाधित बच्चों के लिए सहायक तकनीक (For Hearing Impairment):** जो बच्चे सुन नहीं सकते या कम सुनते हैं, उनके लिए दृश्य संकेत महत्वपूर्ण होते हैं:

- ❖ **श्रवण यंत्र (Hearing Aids):** आवाज को तेज और स्पष्ट करने वाले डिजिटल उपकरण।
- ❖ **FM सिस्टम:** इसमें शिक्षक एक माइक्रोफोन पहनता है और आवाज सीधे बच्चे के श्रवण यंत्र (Receiver) तक पहुँचती है, जिससे कक्षा का शोर बाधा नहीं बनता।
- ❖ **कैप्शनिंग और सबटाइटलिंग:** वीडियो और डिजिटल लेक्चर के साथ लिखे हुए शब्द (Subtitles) दिखाना।
- ❖ **वीडियो रिले सेवा:** सांकेतिक भाषा (Sign Language) के माध्यम से संवाद करने के लिए वीडियो टूल्स।

**C. शारीरिक अक्षमता के लिए सहायक उपकरण (For Physical/Motor Disabilities)**

- ❖ चलने-फिरने या हाथ के उपयोग में कठिनाई वाले बच्चों के लिए:
- ❖ **वैकल्पिक कीबोर्ड और माउस:** जैसे जॉयस्टिक, ट्रैकबॉल, या 'आई-ट्रैकिंग' (Eye-tracking) तकनीक, जहाँ बच्चा केवल आँखों की पुतलियों से कंप्यूटर चला सकता है।
- ❖ **स्पीच-टू-टेक्स्ट (Speech-to-Text):** जो बच्चे लिख नहीं सकते, वे बोलकर अपने असाइनमेंट टाइप कर सकते हैं।
- ❖ **अनुकूलित फर्नीचर:** व्हीलचेयर के अनुकूल डेस्क और पकड़ने में आसान (Grip-friendly) पेन/पेंसिल।

**D. संज्ञानात्मक और सीखने की अक्षमता के लिए (For Learning Disabilities/Dyslexia)**

- ❖ डिस्लेक्सिया या ऑटिज्म जैसे विकारों वाले बच्चों के लिए:

- ❖ **ग्राफिक ऑर्गनाइज़र:** विचारों को चित्रों और चार्ट के माध्यम से समझाने वाले ऐप्स।
- ❖ **टेक्स्ट-टू-स्पीच:** कठिन शब्दों को सुनकर समझने के लिए।
- ❖ **स्पेल चेकर्स और वर्ड प्रेडिक्शन:** लिखने में मदद करने वाले सॉफ्टवेयर जो शब्दों का सुझाव देते हैं।
- ❖ **विजुअल टाइमर:** समय प्रबंधन और ध्यान केंद्रित करने में मदद करने वाले टूल्स।

## सुझाव

1. किसी भी बच्चे को उसकी शारीरिक, मानसिक या सामाजिक स्थिति के आधार पर प्रवेश देने से मना नहीं किया जाना चाहिए। हर बच्चे का शिक्षा पर समान अधिकार है।
2. स्कूल की इमारत में रैंप, रेलिंग, चौड़े दरवाजे और सुलभ शौचालय होने चाहिए ताकि व्हीलचेयर का उपयोग करने वाले बच्चे स्वतंत्र रूप से घूम सकें।
3. प्रत्येक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CWSN) के लिए उसकी क्षमता के अनुसार एक अलग लक्ष्य और योजना तैयार की जानी चाहिए।
4. पाठ्यक्रम को लचीला बनाना चाहिए ताकि वह बच्चे की सीखने की गति के अनुरूप हो। इसमें 'Universal Design for Learning' (UDL) का उपयोग किया जा सकता है।
5. सुनने के यंत्र (Hearing Aids), ब्रेल किताबें, स्क्रीन रीडर सॉफ्टवेयर और विशेष कीबोर्ड जैसे उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
6. शिक्षकों को विशेष शिक्षा (Special Education) और समावेशी शिक्षण विधियों में नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे विविधता को संभाल सकें।
7. बच्चे की अक्षमता या सीखने की कठिनाई को शुरुआती चरणों में ही पहचान कर उसे उचित सहायता प्रदान करना।
8. सामान्य शिक्षकों और विशेष शिक्षकों (Special Educators) को मिलकर काम करना चाहिए ताकि कक्षा में हर बच्चे पर ध्यान दिया जा सके।
9. कक्षा के अन्य बच्चों को संवेदनशील बनाना ताकि वे अपने विशेष सहपाठियों की मदद करें। इससे सामाजिक समावेशन (Social Inclusion) बढ़ता है।
10. परीक्षाओं में विकल्प देना, जैसे मौखिक परीक्षा, चित्र बनाना, या लिखने के लिए अतिरिक्त समय और 'स्क्राइब' (लेखक) की सुविधा देना।
11. बच्चे की प्रगति में माता-पिता को सक्रिय रूप से शामिल करना और उन्हें घर पर बच्चे की सहायता करने के तरीके बताना।

12. स्कूल के स्टाफ, अन्य छात्रों और समुदाय के बीच दिव्यांगता के प्रति जागरूकता फैलाना ताकि भेदभाव को खत्म किया जा सके।
13. स्कूल में एक ऐसा कमरा होना चाहिए जहाँ विशेष उपकरण और सामग्री रखी हो, जहाँ विशेष शिक्षक बच्चे को अतिरिक्त सहायता दे सकें।
14. समय-समय पर स्वास्थ्य जाँच शिविर लगाना और यह सुनिश्चित करना कि बच्चे के स्वास्थ्य संबंधी अवरोधों को दूर किया जाए।
15. शिक्षा को केवल किताबों तक सीमित न रखकर बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यावसायिक कौशल (जैसे शिल्प, कला, कंप्यूटर) की शिक्षा देना।

### निष्कर्ष

समावेशी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं है, बल्कि वे एक मार्गदर्शक, परामर्शदाता (Counsellor) और परिवर्तन के अग्रदूत के रूप में कार्य करते हैं। उनके बिना समावेशी शिक्षा का लक्ष्य 'समानता से समता' (Equality to Equity) की ओर बढ़ना असंभव है। बाधा-मुक्त वातावरण बच्चे की अक्षमता को उसकी शिक्षा के आड़े नहीं आने देती। यह वातावरण बच्चे को 'बेचारा' नहीं बनाता, बल्कि उसे 'आत्मनिर्भर' बनाने के अवसर प्रदान करता है।

### संदर्भ ग्रंथ सूची (BIBLIOGRAPHY)

1. मंगल, एस. के. (2018): समावेशी विद्यालय का निर्माण (Creating an Inclusive School), पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
2. दश, बी. एन. (2019): समावेशी शिक्षा (Inclusive Education), डोमिनेंट पब्लिशर्स।
3. शर्मा, आर. ए. (2020): विशिष्ट बालक (Exceptional Children), आर. लाल बुक डिपो। (विभिन्न प्रकार की अक्षमताओं और उनके लिए सहायक उपकरणों की व्याख्या।)
4. पाठक, पी. डी. (2021): समावेशी शिक्षा के सिद्धांत, विनोद पुस्तक मंदिर।
5. भारत सरकार (2020): राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020), शिक्षा मंत्रालय। (समावेशी शिक्षा और 'Equitable Education' के लक्ष्यों के लिए विशेष संदर्भ।)
6. NCERT (2005): राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF 2005), समावेशी शिक्षा पर विशेष फोकस समूह रिपोर्ट।

7. भारत सरकार (2016): दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (RPWD Act 2016), सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय। (कानूनी ढांचे और बाधा-मुक्त वातावरण के मानकों के लिए अनिवार्य स्रोत।)
8. UNESCO (1994): सालामानका वक्तव्य और कार्रवाई का ढांचा (Salamanca Statement), समावेशी शिक्षा के वैश्विक सिद्धांतों का आधार।
9. भारतीय आधुनिक शिक्षा (NCERT Journal): समावेशी कक्षा में शिक्षण विधियों और शिक्षक प्रशिक्षण पर शोध लेख।
10. Journal of Indian Education: प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर समावेशन की चुनौतियों पर अध्ययन।
11. NCTE (2009): National Curriculum Framework for Teacher Education (NCFTE), प्रशिक्षित शिक्षकों की भूमिका और कौशल विकास पर मार्गदर्शिक
12. ई-पाठशाला (e-Pathshala): समावेशी शिक्षा मॉड्यूल (NCERT)।
13. स्वयं (SWAYAM Portal): "Inclusive Education" विषय पर उपलब्ध ऑनलाइन कोर्सेज के नोट्स।
14. NIVH (देहरादून) एवं AYJNIHH (मुंबई): दृष्टि और श्रवण बाधित बच्चों के लिए सहायक उपकरणों की तकनीकी सूची।